आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 8 अप्रेल, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

ग्रीष्मकाल में पशुओं की उचित देखभाल आवश्यक

राजस्थान में पशुपालन, विशेषकर शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में, कृषि की सहायक गतिविधि ही नहीं अपितु एक प्रमुख गतिविधी है जो अकाल की स्थिति में पशुपालकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। पशुपालन वर्षा आधारित क्षेत्र में कृषि प्रणाली की आर्थिक व्यवहार्यता और स्थायित्व को बढ़ाता है एवं गरीब पशुपालकों को सतत् एवं स्थाई आजीविका प्रदान करता है। राजस्थान एक अत्याधिक गर्म प्रदेश है अतः गर्मियों में पशुओं की देखभाल पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उत्तर पश्चिमी भारत में गर्मी बहुत अधिक पड़ती है और लम्बे समय तक रहती है, यहां गर्मियों में तापमान 45–48 डिग्री तक चला जाता है जिसके कारण ग्रीष्मकाल में पशु प्रबंधन एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है। बेहद गर्म मौसम में पशु दबाव की स्थिति में आ जाता है जिसके कारण पशुओं की पाचन प्रणाली और दूध उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा नवजात पशु की देखभाल में जरा सी लापरवाही व असावधानी उनकी भविष्य की शारीरिक वृद्धि, स्वास्थ्य, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उत्पादन क्षमता पर कुप्रभाव डालती है। ग्रीष्म ऋतु में पशु की चारा खाने की क्षमता में 10–30 प्रतिशत की कमी तथा दूध उत्पादन क्षमता में 10 प्रतिशत तक की कमी आ हो सकती है। अतः ग्रीष्मकाल में दूध उत्पादन बनाए रखने के लिए आहार व आवास व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इस ऋतु में पशु को दाने के रूप में प्रोटीन की मात्रा लगभग 18 प्रतिशत तक दूध उत्पादन करने वाले पशुओं को खिलानी चाहिए जिससे पशु की उत्पादन क्षमता बनी रहे। गर्मी के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है इसलिए पशुपालकों को गर्मी के मौसम में हरे चारे के लिए मार्च–अप्रेल माह में मक्का, काउपी, बाजरा आदि की बुवाई कर देनी चाहिए जिससे गर्मी में पर्याप्त मात्रा में हरा चारा मिलता रहे। साथ ही हरे चारे का संरक्षण कर साइलेज एवं ''हे'' बनाकर भी रख लेना चाहिए ताकि इन विषम परिस्थितियों में काम आ सके। गर्मी के मौसम में पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ व स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए जिससे शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। चारे–दाने के अतिरिक्त खनिज मिश्रण व लवण (नमक) पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए, ये पशुओं में गर्मी के प्रभाव को कम करते हैं तथा शारीरिक कार्य प्रणाली को सुचारू चलाने में मदद करते हैं व इसके साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाते है। अंततः उपयुर्क्त सुझावों के अनुरूप पशुपालक पशुओं को ग्रीष्मकाल में आने वाली चुनौतियों को सहज बना सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

रोग निदान तकनीकों पर 100 फिल्ड पशुचिकित्सकों का प्रशिक्षण

फील्ड पशुचिकित्सकों के लिए रोग निदान व चिकित्सकीय कौशल प्रशिक्षण जरूरी: कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं पशुपालन विभाग, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में फील्ड पशुचिकित्सकों के लिए 1–15 मार्च तक पांच दिवसीय तीन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि फील्ड में कार्यरत पशुचिकित्सकों को विभिन्न रोग निदान एवं चिकित्सकीय कौशल की आवश्यकता पड़ती है ऐसे प्रशिक्षण समय समय पर आयोजित किये जाने चाहिए ताकि पशुचिकित्सकों की कौशल क्षमता का विकास हो सके साथ ही फील्ड में विभिन्न आवश्यकताओं को देखते हुए प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। पशुपालन विभाग ऐसे विभिन्न क्षेत्रों को पहचाने एवं उसके अनुसार ही फील्ड चिकित्सकों को विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रशिक्षण देवें ताकि क्षेत्र विशेष की आवश्यकता अनुसार कौशल क्षमता का पशुरोग निदान हेतु पूर्ण उपयोग हो सके। इन तीनों प्रशिक्षण शिविरों में आमन्त्रित विशिष्ट अतिथि डॉ. ए.साहू, निदेशक, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक, बीकानेर डॉ. हुक्माराम, अतिरिक्त निदेशक, जयपुर डॉ. प्रकाश भाटी, अतिरिक्त निदेशक, उदयपुर डॉ. भूपेन्द्र भारद्वाज, संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. विरेन्द्र नेत्रा ने भी प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि भारत सरकार की एस्केड परियोजना के अंर्तगत पशुपालन विभाग के बीकानेर, श्रीगंगानगर, चूरू, हनुमानगढ़, जोधपुर, अजमेर, टोंक, सिरोही, नागौर, भीलवाड़ा, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर आदि जिलों के 60 पशुचिकित्सकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण सह–समन्वयक डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. मनोहर सेन तथा डॉ. तरूणा भाटी रहे। फिल्ड पशुचिकित्सको के लिए एक–एक प्रशिक्षण पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर एवं वेटरनरी कॉलेज, उदयपुर में आयोजित किये गये, जिसमें 40 पशुचिकित्सकों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रशिक्षण मेन्यूअल का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया।

बैकयार्ड मुर्गी पालन हो सकता है आर्थिक उन्नति का आधार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "लघु कुक्कुट पालन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण 8–9 मार्च को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में बीकानेर जिले के 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रसार शिक्षा निदेशक, प्रो. राजेश कुमार धूडिया ने बताया कि बैकयार्ड मुर्गी पालन कम लागत में शुरू होने वाला व्यवसाय है अतः पशुपालक पारंपरिक पशुपालन के साथ साथ बैकयार्ड मुर्गी पालन कर आर्थिक मुनाफा अर्जित कर सकते है। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अरूण कुमार झीरवाल थे। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में नेमदास रामावत प्रथम, राम सिंह द्वितीय एवं नरेन्द्र सिंह तृतीय स्थान पर रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में तीन दिवसीय बैकयार्ड पोल्ट्री प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़–II) के द्वारा प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर के निर्देशन में मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय, भारत–सरकार द्वारा प्रायोजित लाभदायक डेयरी फार्मिंग और पशुधन प्रबंधन संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत बैकयार्ड मुर्गीपालन विषय पर तीन दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 14–16 मार्च, 2022 को किया गया। मुख्य अतिथि कृषि अधिकारी सुरेन्द्र जाखड़, कृषि विभाग, नोहर थे। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। केन्द्र के प्रभारी डॉ. मनोहर सैन प्रशिक्षण समन्वयक थे।

अकादमिक परिषद् की 20वीं बैठक सम्पन्न

मेरिटोरियस विद्यार्थियों को मिलेगें स्वर्ण, रजत व ब्रान्ज मैडल

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 20वीं अकादमिक परिषद् की बैठक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 21 मार्च को आयोजित की गई। बैठक में बी.वी.एस.सी. एण्ड ए.एच. पाठ्यक्रम के साथ–साथ अन्य सभी नये स्नातक पाठ्यक्रमों में भी विद्यार्थियों को शैक्षणिक प्राप्तांक के आधार पर गोल्ड मेडल के साथ–साथ सिल्वर एवं ब्रांज मेडल देने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया ताकि विद्यार्थियों में इस हेतु प्रतिस्पर्धा बढ़े व शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार हो सके। इस बैठक में द्विवर्षिय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम के वार्षिक परीक्षा परिणाम में ग्रेस मार्क्स प्रदान करने, बी.वी.एस.सी. एण्ड ए.एच. विद्यार्थियों को ट्रांसक्रिप्टस प्रदान करने का निर्णय लिया गया। संबद्ध द्विवर्षिय पशुपालन डिप्लोमा संस्थान का वार्षिक मूल्यांकन के पश्चात् नये शैक्षणिक सत्रों हेतु मान्यता बढ़ाने के निर्णय को परिषद् द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

पशुचिकित्सा में भी डायग्नोस्टिक तकनीकों का उपयोग समय की मांग: कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग द्वारा फील्ड पशुचिकित्सकों का "पशु रोगों के इलाज में डाग्यनोस्टिक इमेंजिंग, रेडियोग्राफी और अल्ट्रासोनोग्राफी तकनीको का उपयोग" एवं 'फील्ड की परिस्थितियों में पशुओं में एनेस्थीसिया का उपयोग' विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन 21–23 मार्च व 24–26 मार्च को किया गया। समापन सत्र में पशुचिकित्सकों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि मनुष्य की तरह पशुचिकित्सा के क्षेत्र में भी अनेको डायग्नोस्टिक तकनीक रोग निदान हेतु उपयोग में आने लगी है इस क्षेत्र में कौशल विकास के लिए इस तरह के प्रशिक्षणों की आवश्यकता है। कुलपति प्रो. गर्ग ने राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों के शल्य चिकित्सा विशेषज्ञों की कौशलता का लाभ ऑनलाइन माध्यम से लिए जाने पर जोर दिया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. प्रवीण कुमार बिश्नोई ने बताया कि इस प्रशिक्षण में पशुपालन विभाग के 40 पशुचिकित्सकों ने भाग लिया ।

संक्रामक बीमारियों के रोग निदान एवं उचित प्रबन्धन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के एपेक्स सेन्टर द्वारा "पशुओं व मुर्गियों में रोग निदान" विषय पर आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 26 मार्च को समापन हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह, मानव संसाधन विकास निदेशक प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने फील्ड कंडीशन और प्रयोगशालाओं में रोग की पहचान की महत्वता पर प्रकाश डाला। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्तपोषित इस प्रशिक्षण में वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के 32 अनुसूचित जाति के छात्रों ने प्रशिक्षण लिया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में बकरी प्रदर्शन इकाई का वितरण

बकरी पालन व्यवसाय लघु एवं सीमांत किसानों हेतु वरदान : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 28 मार्च को यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, कृषि विभाग, बीकानेर सहयोग से प्रर्दशन इकाई वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने पशुपालकों को संबोधित करते हुए कहा कि बकरी पालन लघु एवं सीमांत किसानों के लिए वरदान साबित हो सकता है यदि पशुपालक भाई वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाते हुए बकरी पालन करें तो उनकी आर्थिक स्थिति में निश्चित ही सुधार हो सकता है। पशुपालकों को नवीनतम तकनीकें अपनाकर पशुपालन करना चाहिए। राजूराम डोगीवाल उपनिदेशक, आत्मा ने कृषि एवं पशुपालन में हो रहे नवाचारों के बारे में बताया तथा आत्मा के उद्देश्यों एवं गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के अंतर्गत गाढ़वाला में चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में 50 पशुपालकों को वैज्ञानिक विधि द्वारा बकरी पालन हेतु प्रर्दशन इकाईयों (फील्ड मेंजर) एवं राजुवास खनिज मिश्रण का वितरण किया। कार्यक्रम का संचालन यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने किया। कार्यक्रम के दौरान सरपंच प्रतिनिधि मोहनराम एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कुलपति ने किया गाढ़वाला में सिलाई केन्द्र का अवलोकन

कुलपति प्रो. गर्ग द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गांव गाढ़वाला में 28 मार्च को जन शिक्षण संस्थान के सहयोग से चलाए जा रहे सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का अवलोकन किया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि ग्रामीण महिलाओं के लिए सिलाई, कढ़ाई सीख कर आत्मनिर्भर बनना उनके परिवार को संबल प्रदान करना है। इससे ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर बनने के साथ साथ आत्मसम्मान की भी हकदार बनती है। इस केन्द्र में महिलाओं के लिए पांच माह का सिलाई प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने भी महिलाओं को स्वावलम्बन हेतु प्रेरित किया।

गाढ़वाला में नशा मुक्ति रैली

विश्वविद्यालय के द्वारा गोद लिए गांव गाढवाला में वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा विशेष शिविर के अन्तर्गत 25 मार्च को नशा मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ कार्यक्रम अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा और ग्राम पंचायत गाढ़वाला के ग्राम विकास अधिकारी श्री राम रतन चौधरी ने हरी झंड़ी दिखाकर किया। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शर्मा ने स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नशा विभिन्न सामाजिक समस्याओं की जड़ है आज के युवाओं को इसकी लत से बचना चाहिए तथा नशा मुक्ति को जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को नशा मुक्ति का संकल्प भी दिलाया। शिविर के दौरान ग्राम पंचायत परिसर में स्वच्छता अभियान भी चलाया गया।

सीमित संसाधनों में अधिक लाभ के लिए वैज्ञानिक तरीके से बकरी पालन करें

आत्मा योजनान्तर्गत उन्नत बकरी पालन प्रशिक्षण आयोजित

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण बीकानेर में आयोजित किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि विपरित जलवायु परिस्थितियों में बकरी पालन से सीमित संसाधनों में अधिक आय प्राप्त की जा सकती है तथा इसे वैज्ञानिक तकनीकों से करने की आवश्यकता है। इस प्रशिक्षण में हिम्मतासर ग्राम के 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में गोविंदाराम प्रथम, खेमाराम द्वितीय एवं गुमानाराम तृतीय स्थान पर रहे। डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रेल, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	हनुमानगढ़	–	–	बारां, भरतपुर, धौलपुर, चित्तौड़गढ़, गंगानगर, झालावाड़, टोंक
ब्लू टंग	भेड़	–	–	–	अजमेर, अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चूरू, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर
खुरपका–मुंहपका	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर, गंगानगर	–	–	–
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर	–	–	अजमेर, बारां, चितौड़गढ़, गंगानगर, झालावाड़, करौली, टोंक
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	–	बारां, नागौर	जैसलमेर	अजमेर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, चूरू, दौसा, धौलपुर, जयपुर, राजसमन्द, सीकर, उदयपुर
स्वाइन फीवर	सूकर	झालावाड़	–	–	–
थेलिरेओसिस	गाय	–	–	–	बांसवाड़ा, भरतपुर, चूरू, धौलपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 8, 15, 22 एवं 29 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 106 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5, 8, 24, 26 एवं 28 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 218 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 21, 25 एवं 30 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 52 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 26 .मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 23 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 9 एवं 29 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 7, 8, 9 एवं 11 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 113 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5 एवं 10 मार्च को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 81 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 3 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 7–8, 14–15, 21–22, 25–26 एवं 28–29 मार्च को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 167 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 14, 21, 23 एवं 25 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 122 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 3 एवं 15 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 67 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 5, 7, 10, 11, 14, 19, 23 एवं 25 मार्च को विचार गोष्ठी, जागरूकता शिविर एवं तकनीकी हस्तांतरण का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 366 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5 7, 9, 14, 25 मार्च को आयोजित विचार गोष्ठी, कृषक वैज्ञानिक संवाद, तकनीकी हस्तांतरण एवं जागरूकता शिविरों से 183 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र,सिरोही

ाशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 8, 10, 11, 14, 16 21, 23, 25, 26, 29 एवं 30 मार्च को आयोजित विचार गोष्ठी, कृषक वैज्ञानिक संवाद, तकनीकी हस्तांतरण एवं जागरूकता शिविरों से 332 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

प्पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 16, 19, 22, 28 एवं 31 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 4, 7 एवं 19 मार्च को गांव नीमला, 3 एसपीडी एवं धनासर में एक दिवसीय तथा दिनांक 8–10 एवं 14–16 मार्च को केन्द्र परिसर में तीन दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 177 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

यूरिया उपचार द्वारा सूखे चारे की गुणवत्ता बढ़ाना

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ पशुपालन कृषकों का प्रमुख व्यवसाय है, पशु खेती–बाड़ी के काम में तो किसानों का हाथ बटाते ही हैं साथ ही उनके परिवार के लिए दूध, दही, घी, मक्खन भी प्रदान करते हैं। एक तरह से यह पशु किसानों के लिए जमा पूंजी है। पशुपालन व्यवसाय में अच्छा लाभ प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि पशुओं को पर्याप्त और पोषक चारा उपलब्ध कराया जाए। वर्तमान समय में कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण कृषक हरे चारे का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में नहीं कर पा रहे हैं और अपने पशुधन को मजबूरी में पोषणरहित एवं स्वादहीन सूखा चारा खिलाते हैं, जिससे पशु का पेट तो भर जाता है परन्तु इस चारे में पोषक तत्वों जैसे ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तत्व एवं विटामिन का अभाव होता है इस वजह से पशु की वृद्धि दर, उत्पादन क्षमता एवं प्रजनन क्षमता निरंतर कम होती जा रही है और किसान को उचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। अतः ऐसी परिस्थिति में यदि सूखे चारे को यूरिया से उपचारित करें तो बहुत ही कम खर्च पर चारे की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है।

यूरिया उपचारित चारा बनाने का तरीका : यूरिया उपचारित चारा बनाने का एक विशेष तरीका होता है जिसमें यूरिया का घोल तैयार कर इसको सूखे चारे पर छिड़का जाता है।

यूरिया का घोल बनाने का तरीका : 100 किलोग्राम सूखे चारे को उपचारित करने के लिए 4 किलोग्राम यूरिया की आवश्यकता होती है। इस 4 किलोग्राम यूरिया को लगभग 40 से 50 लीटर पानी में घोल लेते हैं जिस बर्तन में घोल तैयार करते हैं पहले उसमें 4 किलोग्राम यूरिया डालते हैं फिर थोड़ा सा पानी डालते है और साफ लकड़ी से घोलना प्रारम्भ कर देते हैं, पानी धीरे–धीरे इस तरह मिलाया जाता है ताकि नापा हुआ सारा पानी इस्तेमाल हो जाए इस तरह यूरिया का घोल तैयार हो जाता है।

यूरिया घोल से चारे को उपचारित करना: इस घोल को छिड़कने के लिए एक साफ–सुथरी जगह पर सूखे चारे को 1 इंच मोटाई में बिछा देते है तथा उस पर यूरिया के घोल का छिड़काव करते हैं उसके बाद सूखे चारे को अच्छी तरह से दबाते हैं। तत्पश्चात इस घोल से छिड़की हुई तह/परत पर दूसरी उतनी ही मोटी तह/परत बिछाते है तथा उस पर भी उसी तरह यूरिया का घोल छिड़क कर उसी तरह तह/परत को दबाते है और यह प्रक्रिया तब तक करते हैं जब तक पूरा घोल और पूरा सूखा चारा इस्तेमाल ना हो जाए।

यूरिया घोल में उपचारित चारे को सील बंद करना: यूरिया से छिड़काव के बाद सूखे चारे की एक ढेरी बनाते है और उस ढेर को बड़े आकार के प्लास्टिक से सील बंद कर देते हैं, प्लास्टिक को ढेर पर पूरा फैला देते हैं और प्लास्टिक के सिरो को चारों तरफ से मिट्टी से दबा देते हैं। छिड़काव के बाद सूखे चारे को प्लास्टिक से सील बंद इसलिए किया जाता है ताकि अमोनिया गैस ज्यादा से ज्यादा अंदर ही रहे और अमोनिया गैस का पूरा असर हो सके।

यूरिया द्वारा उपचारित चारे को कितने समय बाद उपयोग किया जाये: यूरिया उपचारित चारा इस्तेमाल के लिए गर्मी के मौसम में छिड़काव के एक माह बाद और सर्दी के मौसम में छिड़काव के डेढ़ माह बाद निकाली जा सकती है। यह उपचारित चारा खिलाने से पहले चारे को खुली हवा में फैलाना चाहिए जिससे यूरिया की गंध निकल जाये। इस यूरिया उपचारित चारे को हरे चारे के साथ मिलाकर भी पशु को खिलाया जा सकता है।

यूरिया उपचारित चारा खिलाने के लाभ: यूरिया उपचारित चारा पोषक चारे की कमी को तो पूरा करता ही है साथ ही साथ पशुओं की सेहत को भी बेहत्तर बनाता है। यह यूरिया उपचारित चारा आसानी से पच जाता है, दूध बढ़ाता है और आहार पर खर्च भी कम हो जाता है परिणामस्वरूप मुनाफा बढ़ जाता है और पशुपालकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है।

डॉ. नवीन कुमार शर्मा, डॉ. मोनिका जोशी, डॉ. एस.के.शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

गर्मी में पशु के तनाव को कम कर रखें स्वस्थ व उत्पादक

गर्मी के दिन जैसे–जैसे नजदीक आते जा रहें हैं तो पशुपालकों को अपने पशुओं पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। इस बढ़ती गर्मी के बीच में यदि पशुओं की सही तरह से देखभाल नहीं की जाए तो उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दूध देने वाली संकर नस्ल की गायों के लिए लगभग 25–30 डिग्री सेल्सियस का तापमान आरामदेह होता है। बेहद गर्म मौसम में, जब वातावरण का तापमान 42–48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है और गर्म लू के थपेड़े चलने लगते हैं तो पशु दबाव की स्थिति में आ जाते हैं। गर्मी में पशुपालन करते समय उनके प्रबंधन पर उचित ध्यान न देने पर पशु के सूखा चारा खाने की मात्रा में 10 से 30 प्रतिशत और दूध उत्पादन क्षमता में 20–30 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। साथ ही साथ अधिक गर्मी के कारण पैदा हुए आक्सीकरण तनाव की वजह से पशुओं की बीमारियों से लड़ने की अंदरूनी क्षमता पर बुरा असर पड़ता है और आगे आने वाले बरसात के मौसम में वे विभिन्न बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। तेज धूप में पशुओं की त्वचा ऊष्मा को सोख लेती है, जिससे इनका शारीरिक तापमान बढ़ जाता है।

पशुओं में गर्मी व अधिक तापमान के दुष्प्रभाव एवं लक्षण

- पशुओं द्वारा आहार लेने में अरूचि व दुग्ध उत्पादन में कमी।
- नाक से खून बहना एवं पतला दस्त होना।
- आंख व नाक लाल होना एवं हृदय की धड़कन का तेज होना।
- पशु द्वारा गहरी सांस लेना व हाफना, मुंह से जीभ बाहर निकलना।
- पशु की अत्यधिक लार बहना है, मुंह के आसपास झाग आना।
- प्रजनन क्रिया मंद हो जाना व मदचक्र लम्बा हो जाना। जिसके कारण पशुओं में गर्भधारण की संभावना घट जाना।
- गाय, भैंसों के दूध में वसा तथा प्रोटीन की मात्रा का कम हो जाना।
- पशु का व्यवहार असमान्य होना।
- नवजात पशुओं की अल्प आयु में मृत्यु दर बढ़ना।
- बीमार पशु की उचित देखभाल न होने के कारण उसकी मृत्यु तक हो जाना।

गर्मी में पशुओं का प्रबंधन

- पशुपालकों को पशु आवास हेतु पक्के निर्मित मकानों की छत पर सूखी घास या कडवी रखें ताकि छत को गर्म होने से रोका जा सके।
- पशु आवास के अभाव में पशुओं को छायाकार पेड़ों के नीचे बांधे।
- गर्मी के समय में पशुओं को संतुलित आहार के साथ–साथ हरे चारे की अधिक मात्रा उपलब्ध कराना चाहिए।
- गर्मी के मौसम में पशुओं को प्यास अधिक लगती है और भूख कम लगती है इसलिए पशुओं को पर्याप्त मात्रा में दिन में कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिए।
- पशु को पानी में थोड़ी मात्रा में नमक एवं आटा मिलाकर पानी पिलाना चाहिए।
- पर्याप्त मात्रा में साफ सुथरा ताजा पीने का पानी हमेशा उपलब्ध होना चाहिये।
- पशु को प्रतिदिन ठण्डे पानी से भी नहलाने की सलाह दी जाती है। भैंसों को गर्मी में 3–4 बार और गायों को कम से 2 बार नहलाना चाहिये।
- पशुओं को नियमित रूप से खुरैरा करना चाहिये।
- पशु आवास में गर्म हवाओं का सीधा प्रवाह नहीं होने पाये इसके लिए लकड़ी के फटे या बोरी के टाट को गीला कर दें, जिससे पशु आवास में ठण्डक बनी रहे।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

डेयरी पशुओं में संक्रामक बीमारियों के प्रसार को रोकने हेतु सामान्य उपाय

संक्रामक रोग या छूआछूत की बीमारी एक पशु से दूसरे पशुओं में फैलती है। कभी–कभी यह महामारी का रूप भी ले लेती है। संक्रामक रोगों में कुछ ऐसे रोग भी होते हैं जिनका कोई उपचार नहीं होता या उपचार अत्यंत महंगा होता है और अगर पीड़ित पशु ठीक भी हो जाता है तो देखा जाता है कि प्रायः दूध की मात्रा काफी कम हो जाती है, जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि होती है। अगर पशुपालक पशुओं के बीमार होने से पहले सर्तक हो जाये तो पशु को रोगग्रस्त होने का खतरा काफी कम हो जाता है इसलिए पशुपालकों को कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए –

पृथक्करण :– इस प्रक्रिया में संक्रामक बीमारी से ग्रस्त पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखा जाता है। संक्रामक बीमारी से ग्रस्त पशु को जल्दी से पहचान कर स्वस्थ पशुओं से पृथक्करण/अलग कर दूर रखा जाना चाहिए। पशुपालक भी बीमार पशु के पास जाने से पहले डिस्पोजल एप्रन, दस्ताने, जूते पहनें व एंटीसेप्टिक का इस्तेमाल करें। बीमार पशु के दूषित पानी, चारे एवं बिछावन सामग्री का उचित निस्तारण करें। अलग किए पशु की पूरी तरह से ठीक होने पर ही स्वस्थ पशु के पास लेकर जाएं।

संगरोध (क्वांरटाइन) :– इस प्रक्रिया में नए लाए गए या खरीदे गये पशु को कुछ समय के लिए अलग रखा जाये ताकि फार्म में किसी तरह की बीमारी न फैले। संगरोध अवधि कम से कम इक्किस (21) से तीस (30) दिन की होनी चाहिए। संगरोध अवधि में बीमारियों के लिए परीक्षण व टीकाकरण अवश्य करवाएं।

परिसर प्रबंधन :– इसमें फार्म की स्वच्छता, उसे कीटाणु रहित करना तथा फार्म की सफाई जैसी प्रक्रिया शामिल है। इससे बीमारियों के फैलने की संभावना कम हो जाती है। साफ–सफाई के लिए सबसे पहले ब्रशिंग, स्क्रेपिंग जैसी शुष्क सफाई करनी चाहिए। इसके बाद उचित कीटाणुनाशक घोल जैसे सोडा घोल या फिनाईल के घोल से सफाई करनी चाहिए, डिटर्जेंट और लाईम पाऊडर का वाशिंग घोल भी इस्तेमाल कर सकते हैं। सूरज की रोशनी भी कीटाणुनाशक का काम करती है। घर इस तरह होना चाहिए जिससे सूरज की रोशनी और हवा पहुंचने की पूरी–पूरी व्यवस्था रहे। फर्श पर पड़े गोबर, पशु मूत्र, नांद के नीचे कीचड़ जितनी जल्दी हो सके हटा दें एवं पशुओं के शरीर की सफाई का पूरा–पूरा ध्यान रखें। कुछ घंटों के बाद साफ पानी से धोवें। पानी की नालियां एवं नांद की भीतरी तरफ सफेदी करनी चाहिए एवं उपयोग में लिये जाने वाले उपकरणों को गर्म पानी से धोना चाहिए।

टीकाकरण :– पशुओं में फैलने वाली बीमारियां अधिकतर स्थानिय होती है। इसका मतलब एक बार जिस स्थान पर फैलती है उसी स्थान पर बार–बार फैलती है, इसलिए समय से पहले बचाव का टीका लगवाना चाहिए। टीकाकरण से पहले स्वच्छता एवं पशु के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। खुराक और टीकाकरण के मार्ग के लिए लिखे गए निर्देशों का पालन करना चाहिए। टीकाकरण के समय पशु तनाव में नहीं हो इसका ध्यान रखना चाहिए। टीकाकरण सभी स्वस्थ पशुओं का एक साथ करना चाहिए। टीकाकरण की तालिका का सख्ती से पालन करें तथा उचित रिकार्ड रखें।

यदि गांव या पड़ोस के गांव में कोई संक्रामक रोग फैलने पर पशुओं के बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय कारगर रहते हैं –

- ❖ सबसे पहले रोग के फैलने की सूचना अपने ब्लॉक के पशुधन सहायक या ब्लॉक के पशुपालन पदाधिकारी को देनी चाहिए।
- ❖ अगर पड़ोस के गांव में बीमारी फैली हो तो उस गांव से मवेशियों या पशुपालकों का आवगमन बंद कर दिया जाए।
- ❖ सार्वजनिक तालाब से पानी पिलाना तथा सार्वजनिक चारागाह में पशुओं को भेजना तुरंत बंद कर देना चाहिए।
- ❖ संक्रामक रोग से मरे हुए पशु को जहां–तहां फेंकना खतरे से खाली नहीं। मृत पशु को जला देना चाहिए या 5–6 फुट गड्ढा खोद कर चूना मिलाकर गाढ़ देना चाहिए।
- ❖ जिस स्थान पर बीमार पशु रखा गया हो या मरा हो, उस स्थान को फिनाईल की घोल से अच्छी तरह से धोना चाहिए या साफ–सुथरा कर वहां चूना छिड़क देना चाहिए ताकि रोग के जीवाणु या विषाणु मर जाए।

अतः पृथक्करण, संगरोध (क्वांरटाइन), परिसर प्रबंधन और टीकाकरण का नियमित तौर पर पालन करने से डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य और कल्याण का पूरा ख्याल रखा जा सकता है। इससे न केवल किसानों की आय में वृद्धि की जा सकती है बल्कि पशु कल्याण भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

डॉ. रजनी अरोड़ा, डॉ. लोकेश सहारण (94144080359)
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशुपालन व जैविक खेती से श्रवणराम को मिली नई पहचान

वर्तमान में पशुपालन व खेती समय की जरूरत है, क्योंकि खेती के साथ पशुपालन करके ही किसान अपनी आय को दुगुनी कर सकता है। इसका उदाहरण बने हैं लूणकरनसर तहसील के भाडेरा गांव के श्रवणराम गोदारा जिन्होंने वैज्ञानिक पशुपालन व नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशुधन उत्पादन को बढ़ाने में सफलता पाई है। श्रवणराम पहले घर की जरूरतों के अनुसार ही पशुपालन करते थे, परन्तु परिवार में बढ़ते खर्चो के कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने खेती के साथ–साथ पशुपालन को बढ़ाना ही उचित समझा। श्रवणराम पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर के द्वारा आयोजित किये गये विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विशेषज्ञों के संपर्क में आकर दुग्ध उत्पादों जैसे– पनीर, मावा इत्यादि को घर पर बनाकर बाजार में बेचना शुरू कर दिया साथ ही खनिज लवणों की उपयोगिता, कृमिनाशक दवाओं का महत्व, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान, ग्याभिन पशुओं की देखभाल व संतुलित पशु आहार आदि के महत्व को समझकर एवं प्रयोग में लाकर अपनी आय को बढ़ाया। पशुपालन के साथ ही जैविक खेती को अपनाकर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया। वर्तमान समय में श्रवणराम के पास 40 बीघा सिंचित कृषि भूमि के साथ–साथ 25 गायें हैं, जिसमें 7 राठी नस्ल, 2 साहीवाल नस्ल, 16 क्रोस ब्रीड़ तथा 2 मुर्रा नस्ल की भैंस है। श्रवणराम पशुधन से लगभग 180 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त कर लगभग 80 हजार रूपये प्रतिमाह की आय प्राप्त कर रहे हैं। श्रवणराम पशुओं से मिलने वाली गोबर खाद् से वर्मीकम्पोस्ट बनाकर खेती में उपयोग कर रासायनिक खाद् की निर्भरता को कम किया एवं पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में नेपियर घास तथा अजोला घास भी लगा रखी है। श्रवणराम अपनी सफलता का श्रेय अपनी मेहनत, परिवार के साथ पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर को देता है। **सम्पर्क–श्रवणराम गोदारा, गांव भाडेरा (लूणकरनसर–बीकानेर) मो. 9829071351**

निदेशक की कलम से...

पशुधन का भविष्य नवजात पशुओं की देखभाल पर निर्भर

राजस्थान में पशु सम्पदा का विशेष रूप से आर्थिक महत्व है। राज्य के कुल क्षेत्रफल का 61 प्रतिशत मरूस्थलीय प्रदेश है जहां जीविकोपार्जन का मुख्य साधन पशुपालन ही है। राज्य के मरूस्थलीय और पर्वतीय क्षेत्रों में भौगोलिक और प्राकृतिक परिस्थितियों का सामना करने के लिए एक मात्र विकल्प पशुपालन ही है। राज्य में एक ओर वर्षा के अभाव के कारण कृषि से जीविकोपार्जन करना कठिन होता है वहीं दूसरी ओर औद्योगिक रोजगार के अवसर भी नगण्य है, ऐसी स्थिति में किसानों ने पशुपालन को ही जीवन शैली के रूप में अपना रखा है। इस स्थिति में पशुपालन में नवजात बछड़े–बछड़ी पशुधन का भविष्य है। अधिकांश पशुपालकों का अधिक ध्यान दूध देने वाले पशुओं पर होता है, नवजात बछड़े–बछड़ियों की तरफ उनका ध्यान कम रहता है। फलस्वरूप उनकी शारीरिक वृद्धि एवं भविष्य में होने वाले उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उचित देखभाल के अभाव में नवजात बछड़े–बछड़ी कमजोर हो जाते हैं तथा उनकी मृत्यु तक हो जाती है। एक शोध से ज्ञात हुआ है कि उचित प्रबंधन के अभाव में 15–20 प्रतिशत बछड़े–बछड़ी जन्म के एक माह की अवधि में ही मर जाते हैं। सभी पशुपालकों को यह बात समझनी चाहिए की पशुधन का भविष्य नवजात पशु की देखभाल व प्रबंधन पर निर्भर करता है। अतः पशुपालक को नवजात पशु के प्रबंधन सम्बन्धी बारिकियों को ध्यान में रखना चाहिए। नवजात बछड़े–बछड़ी का प्रथम आहार मां का दूध अर्थात खीस होता है। बछड़े के लिए पोषण और तरल पदार्थ का प्राथमिक स्त्रोत होता है। यह खीस नवजात पशु को संक्रामक रोगों और पोषण सम्बन्धी कमियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है। नवजात पशुओं को स्वच्छ एवं हवादार बाड़े में रखना चाहिए। बाड़े में सूखी बिछावन का प्रबंध करना चाहिए। तीन महिने तक पर्याप्त दूध पिलाना चाहिए इसके साथ–साथ पिसा हुआ मक्का, शीरा व खनिज लवण काफ स्टार्टर 10 दिन की उम्र से देना प्रारम्भ कर देना चाहिए जो बछड़े के आमाशय विकास में मदद करता है तथा समय–समय पर पशुओं को परजीवी नाशक दवा भी देनी चाहिए। संक्रामक रोगों से बचाव हेतु समय–समय पर टीकाकरण भी अति आवश्यक है। यदि पशुपालक अपने नवजात बछड़े–बछड़ी की उचित देखभाल व प्रबंधन करेंगे तो निश्चित ही बछड़े–बछड़ी भविष्य में अच्छे उत्पादक बनेंगे, जो पशुपालन व्यवसाय में अधिकतम लाभ प्रदान कर पशुपालक की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनायेंगे।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया